आराध्या आराधना

1200 वर्ष प्राचीन भूगर्भ से प्रगटित
1008 श्री मंशापूर्ण महावीर स्वामी जी
गंगनहर, मुरादनगर

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान 'सौरभांचल'
श्री सम्मेद शिखरजी, मधुबन

दिगम्बराचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।

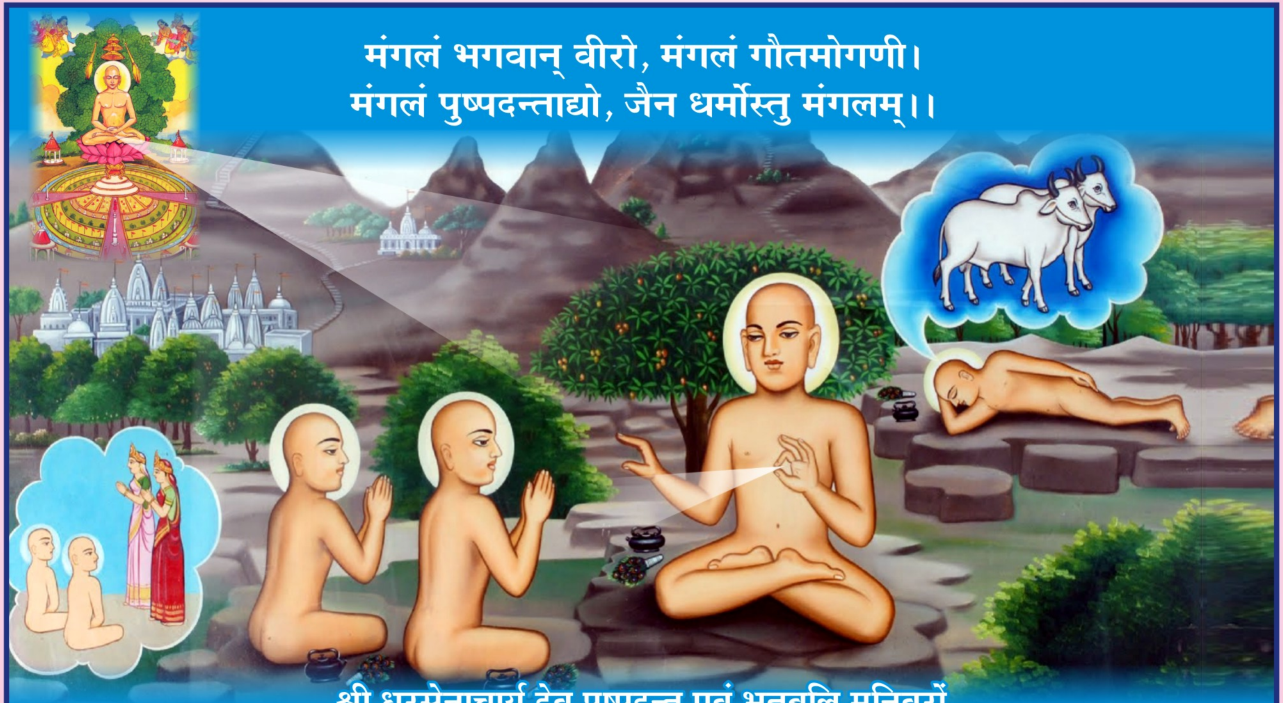

श्री धरसेनाचार्य देव पुष्पदन्त एवं भूतबलि मुनिवरों
को षट्खण्डागम का उपदेश देते हुए।

आराध्य आराधना

अनुक्रम

एक ऐतिहासिक सत्य	3
आचार्य वन्दना	5
श्रुत भक्ति	5
लघु आचार्य भक्ति	6
श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र	8
चौबीस तीर्थंकर स्तुति	12
त्रिकाल चौबीसी प्रत्येक अर्घ	17
सम्मेदशिखर वंदना	25
देव-शास्त्र-गुरु तीर्थ वंदना	28
श्री पद्मप्रभु चालीसा	29
श्री मंशापूर्ण महावीर स्तुति	32
श्री मंशापूर्ण महावीर चालीसा	34
श्री 1008 मंशापूर्ण महावीर आरती	37
माँ जिनवाणी वन्दना	38
आचार्य पुष्पदन्त गुरु वंदना	41
आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की पूजा	43
आचार्य श्री 108 सौरभ सागर चालीसा	49
आरती आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की	52
अर्घ-मंशापूर्ण महावीर स्वामी	52
अर्घ-गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी	53
अर्घ-आचार्य श्री सौरभ सागर जी	53
विशेष जाप	54

“मंगलं पुष्पदन्ताद्यो” एक ऐतिहासिक सत्य

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्॥

जैन धर्म में देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा ही सम्यग्दर्शन में कारण है। चौबीस तीर्थंकर एवं 1452 गणधर तथा द्वादशांगमय श्रुतज्ञान होने के उपरांत भी वर्तमान काल में तीर्थंकर महावीर स्वामी का शासन काल होने के कारण मंगल स्वरूप वे ही हैं इसलिए **“मंगलं भगवान् वीरो”** कहकर **“दीपावली पर्व”** को महत्व दिया जाता है तथा उनके प्रथम गणधर गौतम स्वामी की दीक्षा की स्मृति को **“मंगलं गौतमो गणी”** कहकर **“गुरु पूर्णिमा”** के रूप में महत्व दिया जाता है तथा 633 वर्ष बीतने के उपरांत श्रुत विच्छेद न हो जाये इसलिए मंत्र ज्ञाता धरसेनाचार्य ने अपना अंग श्रुतज्ञान आचार्य पुष्पदंत स्वामी को समर्पित किया और कहा भी है–

जयउ धरसेण णाहो जेण महाकम्म पयडि पाहुड सेलो।
बुद्धि सिरेणुद्धरियो समप्पियो पुप्फदंतस्स॥

(ध.पु.भा.-2)

अर्थात् वे धरसेन स्वामी जयवंत हों, जिन्होंने **महाकर्मप्रकृति** प्राभृत रूपी पर्वत को अपनी बुद्धिरूपी मस्तक पर धारण करके **आचार्य पुष्पदंत** को समर्पित किया।

उनसे शिक्षित शिष्य **आचार्य पुष्पदंत** ने **सर्वप्रथम णमोकार मंत्र** को निवद्ध मंगल कर षट्खण्डागम ग्रन्थ लिखना प्रारंभ किया एवं गणधर वलय मंत्र के साथ स्वामी भूतबलि आचार्य ने ग्रन्थ पूर्ण किया। इस उपलक्ष्य में **“श्रुतपंचमी”** पर्व मनाया जाता है यही ऐतिहासिक सत्य है इसलिए शुद्ध ग्रन्थ के प्रथम लेखक के रूप में **ऋषि सभा के अधिपति आचार्य पुष्पदंत स्वामी** का स्मरण करते हुए **“मंगलं पुष्पदन्ताद्यो”** कहा जाता है।

ये तीनों ही जैनधर्म के उत्कृष्ट मंगल स्वरूप हैं। इसलिए धवलाकार वीरसेन स्वामी ने कहा–

“तदो मूलतंत कत्ता वद्ढ़माण भडारयो, अणुतंत कत्ता गौदम स्वामी उवतंत कत्तारा भूदबली पुप्फदंताद्यो वीयराय दोष मोहा मुणिवरा”

(ध.पु.भा.–1, पृ:73)

अर्थात् मूलग्रंथ कर्ता वर्द्धमान भट्टारक अणुतंत कर्ता गौतम स्वामी, उपतंत ग्रंथ कर्ता भूतबलि पुष्पदंतादि, वीतराग दोष मोह रहित मुनिवर हैं।

इसे ही शुद्ध दिगम्बर आगम प्रमाणानुसार निम्न श्लोक के रूप में कहा जाता है–

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

● ● ●

आचार्य वन्दना

अर्थ पौर्वाह्निक (आपराह्निक) आचार्य वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल कर्म क्षयार्थ भाव पूजा वन्दनास्तव समेतं श्री सिद्ध भक्ति कायोत्सर्ग करोम्यहम्।

(नौ बार णमोकार मंत्र पढ़े)

सम्मत-णाण-दंसण-वीरिय-सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरु-लघु-मव्वावाहं अट्ठ गुणा होंति सिद्धाणं।।
तव सिद्ध णय-सिद्धे संजम सिद्धे चरित्त सिद्धेय।
णाणम्मि दंसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमंसामि।।

अंचलिका

इच्छामि भंते! सिद्धभक्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण-सम्मदंसण-सम्म चरित्त जुत्ताणं, अट्ठविह कम्म विप्प मुक्काणं, अट्ठ गुण-संपण्णाणं, उड्ढलोय-मत्थयम्मि पयट्ठियाणं, तव-सिद्धाणं, णय सिद्धाणं, संजम सिद्धाणं, चरित सिद्धाणं अतीताणागद वट्टमाण-कालत्तय सिद्धाणं, सव्व सिद्धाणं, सया णिच्चकालं अंच्चेमि, पूजेमि वन्दामि णमस्सामि, दुक्खक्खओं, कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगइ-गमणं समाहि मरणं, जिन गुण सम्पत्ति होउ मज्झं।

श्रुत भक्ति

अथ पौर्वाह्निक (आपराह्निक) आचार्य वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल कर्म क्षयार्थ भाव पूजा वन्दनास्तव समेतं श्री श्रुत भक्ति कायोत्सर्ग करोम्यहम्।

(नौ बार णमोकार मंत्र पढ़े)

कोटि शंत द्वादश चैव कोट्यो लक्षाण्यशीति-स्त्रयधिकानि चैव।
पंचाशदष्टौ च सहस्त्र संख्य मेतच्छुतं पंच पदं नमामि।।
अहरंत, भासियत्थं गणहर देवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुद-णाण महोवहि सिरसा।।

इच्छामि भंते! सुद भत्ति काउस्सगो कओ, तस्सालोचउं अंगो वंग-पइण्णय-पाहुड़य परियम्म-सुत्त पढमणि ओग-पुव्वगय चूलिया चेव सुत्तत्थय-थुइ धम्म-कहाइयं णिंचकाल अंचेमि पूजेमि वन्दामि णमंसामि, दुक्खक्खओं कम्मक्खओ बोहिलाहो सुगई गमणं समाहि मरणं, जिण-गुण सम्पत्ति होउ मज्झं।

लघु आचार्य भक्ति

अथ पोर्वाह्निक आचार्य वन्दना-क्रियायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण, सकल कर्म क्षयार्थ भाव पूजा वन्दना स्तव समेतं श्री आचार्य भक्ति कायोत्सर्ग करोम्यहम्।

(नौ बार णमोकार मंत्र पढ़े)

श्रुतजलधि-पारगेभ्य: स्व पर मत-विभावना पटुमतिभ्य:।
सुचरित तपो-निधिभ्यो, नमो गुरुभ्यो गुण गुरुभ्य:।।
छत्तीस गुण-समग्गे पंच विहाचार करण संदरिसे।
सिस्साणुग्गह कुसले धम्माइरिये सदा वन्दे।।
गुरुभक्ति संजमेणय तरन्ति संसार सायरं घोरम्।
छिण्णंति अट्ठकम्मं, जम्मण मरणं ण पावेंति।।
ये नित्यं व्रत मंत्र होम निरता, ध्यानाग्नि होत्राकुला:।
षट्-कर्माभिरतास्तपोधन-धना:, साधु क्रिया: साधव:।।

शील-प्रावरणा-गुण प्रहरणाश्-चन्द्रार्क-तेजोधिकाः।
मोक्ष द्वार-कपाट-पाटन भटाः प्रीणन्तु माम् साध्वः।।
गुरवः पान्तु नो नित्यं ज्ञानदर्शन नायकाः।
चारित्रार्णव गंभीरा, मोक्षमार्गोपदेशकाः।।

अंचलिका

इच्छामि भंते! आइरिय भक्ति-काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण, सम्मदंसण-सम्म चरित्त जुत्ताणं-पंच विहाचाराणं-आइरियाणं, आयारादि सुद णाणोवदेसयाणं उवज्झायाणं, तिरयण गुण-पालण-रयाणं सव्व साहूणं, णिंचकालं, अंच्चेमि, पुज्जेमि वन्दामि णमस्सामि दुक्खक्कओ कम्मक्खओं, बोहिलाओं, सुगइगमणं, समाहि-मरणं जिण गुण संपत्ति होउ मज्झं।

नरेन्द्र देवेन्द्र पदार विन्दम्, उपदेशनिपुणः गुरूर-विन्दम्।
सरला स्वभावः करूणा प्रपूर्णं, ते पुष्पदंत प्रणमामि नित्यं।।
खाने, सोने, चलने, पढ़ने में जो भी गुरु-दोष लगे।
क्षमा दान दे प्रायश्चित दे, जिससे यह कर्म शीघ्र भगे।।
तुम जिन आगम के रत्नाकर, मैं अवगुण की खान रहा।
तेरे चरण कमल में गुरुवर, अपना मस्तक झुका रहा।।

महामनस्वी पुष्पदंत ने, ''महामंत्र णमोकार'' लिखा।
एक सौ सत्तहतर सूत्र ज्ञान में, जीव द्रव्य संसार दिखा।।
''पुष्पदंत'' अरुँ ''भूतबली'' ने, आगम का रस पिला दिया।
षट्खण्डागम् ग्रंथ प्रगट कर, जैन धर्म को खिला दिया।।

श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र

हृदय कमल में अर्हत पद का स्थापन जो है करना,
कार्मन काठ जलावन कारण अग्नि ज्वाला है बनना।
निर्मल है वह निर्मल करता अर्हत पद का दाता,
बारम्बार नमूँ मैं उनको, पाऊँ अक्षय साता।
हृदय कमल की आठ पँखुड़ी उनमें क्रम से रखना,
अर्हत, सिद्ध आचार्य उपाध्याय, साधु सर्व विचरना।
सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र उचरना,
ऐसे आठों पूज्यनीय को, चित में फिर फिर धरना।
ऊँ बीजाक्षर प्रथम उचारै, नमः पल्लव करिये,
ध्यान धरै इन आठों पद का, आनन्द उर में भरिये।
अरहंत पद का ध्यान किये से, सिर की रक्षा होवे,
सिद्ध समूह जपन करने से, मस्तक रक्षित होवे।
सूरि सुगुण मन में ध्याने से, नेत्र सुरक्षित होवे,
चौथे पद के गुण चिंतन से, घ्राण सुरक्षित होवे।
मुख की रक्षा करे साधुगण, दर्शन गर्दन रक्षै,
नाभि रक्षे सप्तम पद, जो सम्यग्ज्ञान सुदक्षै।
सम्यक्चारित्र सर्व अंग को, पाद पर्यन्त सुरक्षे,
ऐसे सकलीकरण करन से, होवे पूजक अक्षै।
ऋषि मण्डल यह पूजन भारी, इसको विधि से करिये,
विघ्नविनाश करें सुखदाता, श्री ब्रह्मचारी उचरियें।

सब द्वीपों के मध्य जम्बूद्वीप बसे,
उसकी है आठ दिशा पूरब आदि लसे।
अर्हंतादि पद आठ उनमें राजत हैं,
करिये उनका ध्यान पाप पलावत है।
मध्य सुदर्शन मेरु कंचनमय सोहे,
उपरि सिंहासन माहि अक्षर ह्रीं मोहे।
उनमें चौबीस जिनेश उनके गुण भारी,
अक्षय निर्मल शांत ताप जाड्य हारी।
निरहंकार निरीह सार, सार गुण सोहे,
सौम्य शुद्ध शुभ रूप तीन लोक मोहे।
तीन लोक के स्वामी यातें राजस है,
कर्म घातिया चूरे यातैं तामस है।
सदगुण से भरपूर सात्विक सोहत है,
ज्ञान तेज से सूर्य भ्रमतम खोवत है।
रूपगंध रस वर्ण इनसे दूर रहे,
तो भी है साकार समरस पूर रहे।
पर को दिया त्याग निज रस में पागे,
परमौदायिक देह आतम गुण जागे।
चूरे है सब कर्म तन को है छोड़ा,
निज रस पी संतुष्ट पर से मुँह मोड़ा।
करी कालिमा दूर आकांक्षा पूरी,
संशय रहा न लेश सब आशा पूरी।
ईश्वर ब्रह्मा बुद्ध ज्योति रूप खड़े,
शाश्वत सिद्ध स्वरूप सब में देव बड़े।

लोकालोक प्रकाश करते नाहि थके,
ऐसे श्री ह्रीं देव मेरे मन में धरे।
एक वर्ण दो वर्ण तीन वर्ण धारी,
चार पाँच हैं वर्ण सब के अधिकारी।
ऋषभादिक चौबीस तीर्थंकर सब ही,
ध्याओ उनको नित्य जैसे निम्न कही।
अर्ध चंद्र आकार ह्रीं का नाद कहा,
उसका वर्ण है श्वेत जैसे चन्द्र महा।
उसमें ध्याओ देव श्वेत वर्ण वाले,
चन्द्रप्रमु पुष्पदंत सब के रखवाले।
श्याम वर्ण की देह बिंदी की कीजै,
उसमें लिखिये नेमि मुनिसुव्रत कीजै।
मस्तक ऊपर भाग लाल वर्ण सोहे,
पद्मप्रभु वासुपूज्य अरुँण वर्ण मोहे।
शिर संलीन ईकार नीलम वर्ण कहा,
सुपार्श्व पार्श्व महाराज थापूँ पूज्य महा।
सोलह श्रीजिन देव कंचनमय देहा,
वे-ह-र मध्य लिखेय होवे सुखगेहा।
रागद्वेष मद मोह जीते इन सबने,
मायालीन में ये राजत हैं सब रे।
इनका सदा ध्यान किये जो ज्वाला निकले,
उनमें वेष्ठित देह मेरी जो उजले।
तब नाही विषधर जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।

श्री ऋषिमण्डल मध्य ह्रीं का परिकर है,
उसमें रक्षित देह मेरी सुखकर है।
तब नाहिं नागिन जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
सर्वऋद्धि के ईश अर्हत गणधर हैं,
उनके तेज से लोग वेग सब ही व्याप्त है।
उनका ध्यान किये परम सौख्य होगा,
विलय जायेंगे दु:ख मेरे अति वेगा।
पाताल, लौकिक देव, मध्य लोकवासी,
निर्जर ऊरघ लोक सब विमानवासी।
तुम सब ही जिन भक्त साधर्मी भाई,
करना मेरी सहाय सुनिये मनलाई।
मुनिवर है जगमाहिं अवधि श्रुतधारी,
विक्रिया चारण आदि सब ही ऋद्धिधारी।
मुझ पर कीजै कृपा तुम रक्षक सबके,
अतएव पूजूँ पायें विघ्न हरो जनके।

मुनिकुंजर थे आदिसागर, शान्तिसागर मुनिमहान।
महावीरकीर्ति जी मुनिवर, मंत्रों के ज्ञाता विद्वान।।
विमल सिंधु कई बात बताकर, निमित्त ज्ञानी बनकर उभरे।
पुष्पदंत गुरुराज हमारे, चरण नमूँ जीवन सुधरे।।

चौबीस तीर्थंकर स्तुति

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमतिनाथ स्वामी गुणखान।
पद्म सुपारस चन्दा प्रभु जी, पुष्पदन्त जिन कर लूँ ध्यान॥
हे शीतल प्रभु शीतल करदो, श्रेयनाथ जिन हृदय विशाल।
वासुपूज्य पद बाल ब्रह्म हैं, विमल अनन्त धरम जयमाल॥
शान्ति कुन्थु अर मल्लि जिनेश्वर, मुनिसुव्रत व्रत पाऊँगा।
नमिनाथ नम नेमि शरण पा, पारस वीर को ध्याऊँगा॥
चौबीसों जिनराज हमारे, आज पुकारूँ करुणा धार।
अत्र पधारो हृदय विराजो, कर्म खपाओ हे अविकार॥
तीर्थंकर हे धर्म शिरोमणि, कर्म नाश भव पार करो।
भक्ति भाव से स्तुति करता, मम विनती स्वीकार करो॥

श्री आदिनाथ जी

आदिनाथ प्रथमेश जिन, धर्म कर्म दातार।
भव वारिधी से पार कर, मेटो मम संसार॥1॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ जी

धर्मधुरा धारी प्रभु, धर्म बढ़ावें रोज।
अजितनाथ भगवान के, बन्दूँ चरण सरोज॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभवनाथ जी

संभव सम भव अन्त हो, पाऊँ सिद्ध स्वभाव।
भावों में समभाव हो, तजूँ विकारी भाव॥3॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनन्दननाथ जी

अभिनन्दन वन्दन करूँ, क्रन्दन कर्म नशाय।
जग बन्धन को तोड़कर, सिद्धालय को पाय॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमतिनाथ जी

मिथ्यावाद को दूर कर, स्याद्वाद प्रगटाय।
दुर्बुद्धि दुर्ध्यान तज, सुमतिनाथ शिर नाय॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभु जी

पद्मासन बैठे प्रभू, आतम पद्म खिलाय।
पद्म खिले निज ध्यान का, पद्म प्रभु सिर नाय॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपारसनाथ जी

वीतराग निज ज्ञान में, झलके तीनों लोक।
तत्व प्रकाशक महामुनि, चरण सुपारस धोक॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभु जी

अखिलेश्वर हे महाव्रती, तीर्थ प्रवर्तक आप।
धवल वर्ण तन आत्मा, चन्द्र प्रभु निष्पाप॥8॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदंत जी

भव भंजक भगवान हैं, पुष्पदंत शुभ नाम।
मगर चिह्न तन श्वेत है, शत शत करूँ प्रणाम॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ जी

धर्मामृत का दान दे, शीतल शिवपद पाय।
मम आतम शीतल करे, छोड़े विषय कषाय॥10॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांशनाथ जी

जय जय श्रेयांशम तव गुण पासं, कर्म विनाशं भक्ति करम्।
पावन पद बन्दों जँय जिन चन्दों, कृपा करिंदो शान्ति प्रदम्॥11॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य जी

पाँचों कल्याणक महा, चम्पापुर में पाय।
बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराय॥12॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ जी

बाहर भीतर स्वच्छता, विमल अमल गुणवन्त।
अर्घ चढ़ाकर पूजता, पाने पद अरहन्त॥13॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्तनाथ जी

सुख अनन्त पाया प्रभु, कर कर कर्मन् अन्त।
अर्घ चढ़ा वन्दन करूँ, अनन्तनाथ भँगवन्त॥14॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ जी

ध्वनि सुनि ध्रुवधाम की, धैर्य धर्म प्रगटाय।
ध्याता बन निज ध्येय को, धर्मनाथ सम ध्याय॥15॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शान्तिनाथ जी

जय त्रिभुवन नायक आतम ज्ञायक, कर्म विनाशक शान्ति नमो।
जय शिवपुरवासी ज्ञान प्रकाशी, धर्म विकासी शान्ति नमों॥16॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुन्थुनाथ जी

कर्म जहर निज आत्मा, मरण देय भटकाय।
भक्ति कुन्थुनाथ की, सर्व जहर विनशाय॥17॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथ जी

दर्पण में मुख रूप लख, भूला आत्म स्वरूप।
अरहनाथ सर्व दर्प हर, पाया चिन्मय रूप॥18॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ जी

हे लेश्या तीता भव्या मीता, परम पुनीता मल्लि जिनेश।
जय आत्म विहारी बाल ब्रह्मचारी, आरती उतारी भक्ति विशेष॥19॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथ जी

शत इन्द्रों ने भक्ति कर, नाशा भव भटकाव।
मुनिसुव्रत की अर्चना, देवे निज स्वभाव॥20॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथ जी

नमिनाथ नमता रहूँ, नम्र भाव मन धार।
अहंकार सब मेंट कर, धारूँ शुद्ध विचार॥21॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमीनाथ जी

पशु बन्धन को देखकर, धार लिया वैराग्य।
सर्वदर्शी नेमी प्रभु, नमन जगावें भाग्य॥22॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ जी

क्षायिक नव लब्धि महा, योग निरोध कर पाय।
पार्श्व प्रभु की वन्दना, पाऊँ निज स्वभाव॥23॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी जी

शासन नायक वीर जिन, अनेकान्त सरताज।
समवशरण सन्देश दे, पाय मुक्ति राज॥24॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदि जिनेश्वर जग हितकारी, अजित नाथ जित कर्म विकारी।
संभव भव का नाश किया है, अभिनन्दन जग जान लिया है॥25॥
सुमतिनाथ सन्मार्ग प्रदाता, पद्म प्रभु जी जग विख्याता।
नाथ सुपारस जय हो तेरी, चन्द्रप्रभु काटों भव फेरी॥26॥
पुष्पदन्त श्री जिनवर नामा, शीतल शीतलता ध्रुव धामा।
श्रेयनाथ गुण दया निधाना, वासुपूज्य पूजित अविरामा॥27॥
विमलनाथ निर्मलता धारी, है अनन्त अक्षय सुखकारी।
धर्मनाथ जिन धर्म बढ़ावें, शान्तिनाथ मन शान्त करावें॥28॥
कुन्थुनाथ जी काम विजेता, अरहनाथ त्रिपद के नेता।
मल्लिनाथ सब शल्य मिटावें, मुनिसुव्रत व्रत में तिष्ठावें॥29॥
नमिनाथ को नमन हमारी, नेमिनाथ दुख संकटहारी।
पारसनाथ सदा ही ध्याऊँ, महावीर पद शीश नवाऊँ॥30॥
चौबीसों के चरण में, वन्दन बारम्बार।
"सौरभ सागर" नित नमें, भक्तिभाव उरधार॥31॥

त्रिकाल चौबीसी प्रत्येक अर्घ

त्रिकालिक प्रथम तीर्थंकर

धर्म प्रवर्तक आदिनाथ जी, चिन्मय मूरत प्रथम जिनेश।
तीर्थंकर निर्वाण भूत के, प्रारंभिक ज्ञायक अखिलेश॥
आने वाले महापद्म जी, धर्म ध्वजा फहरायेगें।
भूत भविष्यत वर्तमान के, प्रथम तीर्थंकर ध्यायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ निर्वाण महापद्म त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक द्वितीय तीर्थंकर

कर्म विजेता अजितनाथ जी, गज चिन्हाकिंत द्वितीय जिनेश।
सागर से गंभीर भूत के, तीर्थंकर है अपर महेश॥
नर सुर सेवित भावी जिनवर, श्री सुरदेव सदा सुखकार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रय तीर्थंकर जय जयकार॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ, श्री सागर, श्री सुरदेव त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तृतीय तीर्थंकर

जग में संभव सब कुछ है जब, संभवनाथ कृपा बरसे।
महासाधु सा जीवन जीकर, ध्यान मग्न जीवन हरसे॥
आने वाले तीर्थंकर श्री, सुपार्श्वनाथ[1] कल्याण करें।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रय तीर्थंकर ध्यान धरें॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ, महासाधु, सुपार्श्वनाथ त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकर:**–तृतीय तीर्थंकर का सुरिप्रभ नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक चतुर्थ तीर्थंकर

मन मर्कट सा मचल रहा हो, अभिनंदन का जाप करें।
विमलप्रभ सा निर्मल मन कर, जीवन के संताप हरें॥
तीर्थंकर श्री स्वयंप्रभ सम, स्वयं प्रभा प्रगटाऊंगा।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर गुण गाऊंगा॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन, विमलप्रभ, श्री स्वयं प्रभ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक पंचम तीर्थंकर

सुमतिनाथ मति पाने को मन, सुमन सुमन ले नमन किया।
श्री श्रीधर[1] सम शुद्ध आत्म कर, सिद्धालय में गमन किया॥
सर्वात्मभूत जिन देव पांचवे, होने वाले तीर्थंकर।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पूजूँ तीनों तीर्थंकर॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ, श्रीधर, सर्वात्मभूत तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक षष्टम तीर्थंकर

खिला कमल सा चिन्ह आपका, पद्मप्रभु पावन भगवान।
सुदत्तनाथ के समवशरण में, दिव्य ध्वनि खिरती अविराम॥
तीर्थंकर श्री देवपुत्र[2] जी, होवेंगें पुण्यार्थ नमूं।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक सदा नमूं॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु, सुदत्तनाथ, देवपुत्र तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकर**:-पंचम तीर्थंकर सर्वदुध नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकर**:-षष्टम तीर्थंकर जयदेव जी नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक सप्तम तीर्थंकर

स्वयं बोध स्वास्तिक से होता, नाथ सुपार्श्व का लांक्षन है।
कर्म रहित श्री अमलप्रभ[1] जी, सिद्धालय सुख हर क्षण हैं॥
कुल कीर्ति को बर्धित करने, वाले हैं कुलपुत्र[2] मुनि।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक त्रयों मुनि॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ, अमलप्रभ, कुलपुत्र नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक अष्टम तीर्थंकर

चंद्रमणि सम चंद्रकांति मय, चंद्रप्रभु जिनराज महान।
उद्धर जिन उद्धार कराते, सिद्धालय में ज्योतिर्मान॥
उदंकनाथ भावी तीर्थंकर, चरण वंदना नित्य करूं।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर का ध्यान करूं॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभु, उद्धर जिन, उदंक देव तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक नवम् तीर्थंकर

भव भय भंजक पुष्पदंत प्रभु, भवोदधि के तारणहार।
भूतकाल के अंगिर जिनवर, पूजूं कर्मन नाशन हार॥
प्रोष्ठिल[3] है भावी तीर्थंकर, पायेंगे आगे निर्वाण।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर पूजूँ धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त, अंगिर, प्रोष्ठिल तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकर**:-सप्तम तीर्थंकर का सदल नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकर**:-सप्तम तीर्थंकर का उदयदेव जी का भी उल्लेख है।
   भूतकालीन तीर्थंकर:-नवम तीर्थंकर का आडिट नाम का भी उल्लेख है।
3. **भविष्य कालीन तीर्थंकर**:-नवम तीर्थंकर का प्रश्नकीर्ति जी का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक दशम तीर्थंकर

सुखदायक कल्याणक पाया, शीतल स्वामी तप करके।
भूतकाल के सन्मति देवा[1], सद्गति देवे भव हरके।।
जयकीर्ति जिनधर्म बढ़ाने, होंगे दशवें तीर्थंकर।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पूजूं कर्म रहित जिनवर।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ, सन्मति देव, जयकीर्ति तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक ग्यारहवें तीर्थंकर

घाति कर्म विनाशक जिनवर, नाम श्रेयांश है मंगलकार।
सिंधु[2] जिनवर बंदू अघहर, भव ध्वंसि गुण अपरंपार।।
पूर्ण बुद्ध हो मुनिसुव्रत[3] जी, नामधारी भावी जिनराज।
भूत भविष्यत वर्तमान जिन, पूजू निजानंद ध्रुवराज।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांश नाथ, सिंधुनाथ, मुनिसुव्रत नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बारहवें तीर्थंकर

वासुपूज्य ब्रह्मचारी जिनवर, सिद्धालय में रहे विराज।
कुसुमांजलि तीर्थंकर पूजूँ, भूतकाल के हे जिनराज।।
निष्कामी अर[4] अमल जिनेश्वर, नित्य सुखाश्रित बसते है।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक कहते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, कुसुमंजलि, अरनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**-दशम तीर्थंकर का अग्निनाथ नाम का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकरः**-ग्यारहवें तीर्थंकर का सयंम नाम का भी उल्लेख है।
3. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**-ग्यारहवें तीर्थंकर का पूर्णबुद्ध नाम का भी उल्लेख है।
4. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**-बारहवें तीर्थंकर का अरअहम नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक तेरहवें तीर्थंकर

विमल भाव ले विमलनाथ के, विमल गुणों का गान करें।
शिवगण नायक आतम ज्ञायक, जिनवर का सम्मान करें॥
कर्म रहित निष्पाप नाम के, भावी तीर्थंकर जय कार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म शिरोमणि जग हितकार॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ, शिवगणनाथ, निष्पाप नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक चौदहवें तीर्थंकर

जय भगवंतं नाथ अनंतम, पार किये चौदह गुणथान।
राग द्वेष मद मोह विनाशी, तीर्थंकर उत्साह[1] महान॥
निष्कषाय[2] भावी तीर्थंकर, स्वयं स्वयंभू कहलाए।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रैकालिक तीर्थंकर ध्याय॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ, उत्साह नाथ, निष्कषाय नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक पंद्रहवे तीर्थंकर

वस्तु का स्वभाव धर्म है, धर्मनाथ की वाणी है।
ज्ञानेश्वर[3] तीर्थंकर का शुभ, नाम आत्म कल्याणी है॥
विपुल[4] तपस्या विमल भाव से, भावी तीर्थंकर करते।
भूत भविष्यत वर्तमान के, हितकारी जिनवर भजते॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ, ज्ञानेश्वर नाथ, विपुलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**-चौदहवें तीर्थंकर का उत्सव नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**-चौदहवें तीर्थंकर का स्वयंभू नाम का भी उल्लेख है।
3. **भूतकालीन तीर्थंकरः**-पन्द्रहवें तीर्थंकर का यशोधरा नाम का भी उल्लेख है।
4. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**-पन्द्रहवें तीर्थंकर का विमलप्रभ नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक सोलहवें तीर्थंकर

समरस भावों से समता रख, शान्तिनाथ जिनवर ध्याते।
परमेश्वर[1] के परम पदों में, प्रतिदिन नमनान्जलि लाते।।
निर्मल नाथ है भावी भगवन, निर्मलता दे जायेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवर अर्घ चढ़ायेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ, परमेश्वर नाथ, निर्मलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक सत्रहवें तीर्थंकर

जग की क्षण भंगुरता जाना, कुंथुनाथ जग छोड़ गए।
विमलेश्वर[2] वैराग्य धारकर, जगती से मुख मोड़ गये।।
चित्रगुप्त न जीवन लिखते, ये भावी तीर्थंकर है।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवर अर्घ समर्पण है।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ, विमलेश्वर, चित्रगुप्त नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक अठारहवें तीर्थंकर

मछली सा चंचल यौवन है, अरहनाथ जी जान गए।
नाथ यशोधर तीर्थंकर है, जीवन को पहचान गए।।
समाधि गुप्त भावी तीर्थंकर, सन्यासी महिमा गाए।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म प्रवर्तक गुण गाये।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ, वर्धमान नाथ, समाधीगुप्त तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–सोलहवें तीर्थंकर का बदल नाम का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–सत्रहवें तीर्थंकर का विनयेश्वर नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक उन्नीसवे तीर्थंकर

कलश चिन्हधारी प्रभुवर जी, मल्लिनाथ सब क्लेश हरें।
कृष्णमती के समवशरण में, भव्य जीव प्रवेश करें॥
स्वयं स्वयंभू नाथ हितैषी, भावी श्री भगवान बने।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को सदा नमै॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ, कृष्णमती, स्वयंभूनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बीसवे तीर्थंकर

मुनियों का व्रत मुनीसुव्रत ले, मुनियो के मुनि नाथ बने।
ज्ञानमती केवल ज्ञानी जिन, समवशरण सुरनाथ नमें॥
अनिवर्तक शुभ धर्म प्रवर्तक, भावी तीर्थंकर ध्याये।
भूत भविष्यत वर्तमान के, समवशरण धारी ध्याये॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत नाथ, ज्ञानमती, अनिवर्तक नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक इक्कीसवे तीर्थंकर

विश्व विलोकी अरिकुल नाशक, नमिनाथ जय भगवंता।
शुद्धमति तीर्थंकर हितकर, नमूं नमूं जय अरिहंता॥
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, गुण धारी जयनाथ बने।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म धुरंधर चरण नमैं॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ, शुद्धमती, जयनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बाईसवें तीर्थंकर

बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर, नेमिनाथ गिरनार चढ़े।
भूतकाल के भद्रनाथ जी, शुद्ध भाव धर मोक्ष चढ़े।।
विमलनाथ भावी तीर्थंकर, विमल भाव से पूजेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को पूजेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ, भद्रनाथ, विमलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तेईसवे तीर्थंकर

बेरी का उपसर्ग सहा था, केवल ज्ञान मिला उपहार।
अतिक्रांत[1] जी है अतीत के, दीन दयालु धर्माधार।।
देवपाल देवाधिदेव जी, तीर्थंकर है दीनदयाल।
भूत भविष्यत वर्तमान को, अर्घ चढ़ाऊं भर भर थाल।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ, अतिक्रांत नाथ, देवपाल तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक चौबीसवें तीर्थंकर

वर्तमान के वर्धमान जिन, शासन नायक तारणहार।
शांतिनाथ[2] जी देव हमारे, भूतकाल के करुणा धार।।
अनंतवीर्य जी तीर्थंकर पर, भावी काल में होवेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को पूजेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान, शान्तियुक्त नाथ, अनंतवीर्य तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**-तेईसवें तीर्थंकर का अनंतवीर नाम का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकरः**-चौबीसवें तीर्थंकर का शांतास् नाम का भी उल्लेख है।

सम्मेदशिखर वंदना

दोहा– कोड़ा कोड़ी मुनिवरा, कर्म नशावें आन।
भक्ति से वंदन करूँ, करे कर्म की हान।।
तीर्थराज में भक्त जन, भगवन् को हे ध्याय।
जिन प्रतिमा जितनी यहाँ, हाथ जोड़ सिर नाय।।

कर्म नाश की उज्ज्वल भूमि, तीर्थराज सम्मेद शिखर।
श्रद्धालु के पाप हरे जो, करे वंदना गिरी ऊपर।।1।।
हरे भरे वृक्षों से शोभित, पर्वत का कण कण पावन।
आह्वानन स्थापन करता, सिद्ध प्रभु हिय धर धारण।।2।।
संत अनंतानंत यहाँ से, निराकार पद को पाए।
भाव सहित मैं करूँ अर्चना, अष्ट द्रव्य कर में लाये ।।3।।
तीर्थंकर श्री बीस जिनेश्वर, सारे कर्म नशाये हैं।
हृदय कमल में आप विराजो, भाव संजोकर लाये है।।4।।
तीर्थराज सम्मेद शिखर की, जय जय कर वंदन करता।
तीरथ की पावन रज मस्तक, लगते ही क्रंदन हरता।।5।।
टोंक टोंक पर तीर्थंकर के, चरण नमें सुखकारी है।
पग पग ऊपर चढ़ता जाऊँ, जिनवर सब दुखहारी हैं।।6।।
हरियाली की टोप लगाए, पर्वत मनहर सुन्दर है।
प्रथम कूट का नाम "सिद्धवर", अजितनाथ तीर्थंकर है।।7।।
"धवल कूट" से संभवनाथा, अभिनंदन आनंदम है।
सुमतिनाथ "अविचल" सुखकारी बुद्धि सुवासित चन्दन है।।8।।
"मोहन कूट" से पद्म प्रभु जी, आतम पद्म खिलायें है।
नाथ सुपारस कूट "प्रभास" से, सिद्धालय पद पायें है।।9।।

चंद्र प्रभु चंदा सम सोहे, "ललित कूट'' है गिरी विशाल।
पुष्पदंत के चरण नमे जो, "सुप्रभ कूट'' में करे निहाल।।10।।
मंद सुगंध वयारि के संघ, अर्घ चढ़ा बढ़ता जाऊँ।
"विद्युत् कूट" में शीतल प्रभु की, वंदन कर मैं हर्षाऊँ।।11।।
जैन धर्म के कुलाचार का, "संकुल कूट" में नीयम हो।
श्री श्रेयांश का दर्शन प्यारा, त्याग धर्म मय जीवन हो।।12।।
वीर बलि "सुवीर कूट" तक, विमल नाथ को नमता चल।
कूट "स्वयंभू'' नाथ अनन्ता, कर्म नशाने भजता चल।।13।।
धर्मनाथ का कूट "सुदत्ता'', कूट "कुंदप्रभ'' शान्ति जिनेश।
कुन्थुनाथ का कूट "ज्ञानधर", वंदन कर तज राग द्वेष।।14।।
अरहनाथ अरिदमन करावे, "नाटक कूट'' में दर्शन हो।
"सम्बल कूट" का आलम्बन हो, मल्लि चरण स्पर्शन हो।।15।।
कर्म निर्जरा वंदन से कुछ, हम भक्तो का हो जावे।
"निर्जरकूट" में मुनिसुब्रत के, व्रत से कर्म विनश जावे।।16।।
तीनलोक में शत्रु ना हो, कूट "मित्रधर" आ जाऊँ।
नमिनाथ की करूँ वन्दना, तीर्थंकर पद को पाऊँ।।17।।
पार्श्वनाथ पर्वत के मालिक, "स्वर्णभद्र" विराज रहे।
चतुर्गति के बंधन काटो, जगती का ना काज रहे।।18।।
बीसों तीर्थंकर हितकर हैं, नर देवों से वन्दित हैं।
देव देवियाँ हरपल भ्रमते, रक्षित पर्वत शोभित है।।19।।
आदिनाथ और वासुपूज्य का, टोंक बना मनहारी है।
नेमिनाथ महावीर प्रभु को, वंदन यहाँ हमारी है।।20।।
पर्वत पर पावन संतो के, शुभ परमाणु फैले हैं।

रोग-शोक व्याधि बाधा के, दूर रहे सब रेलें हैं।।21।।
नियम लेकर भाव सहित जो, वंदन पूजन करता है।
नरक पशुगति का बंधन तो, इस भव में ही छँटता है।।22।।
घर से जब यात्रा को निकलें, रात्रि भोजन व्यसन तजे।
प्रासुक जल मर्यादित भोजन, सुबह शाम ही ग्रहण करें।।23।।
णमोकार या सिद्ध प्रभु की, सोते उठते जाप करें।
शुद्ध वसन तन मन निर्मल कर, यात्रा से सब पाप हरें।।24।।
अंतिम टोंक की वंदना करके, क्षमायाचना नित्य करें।
फिर से जब तक दर ना आऊँ, एक नियम को ग्रहण करें।।25।।
ऐसे भावों की शुभ यात्रा, नरक पशु गति मुक्त करे।
तन मन घर परिवार मित्र की, सुख शांति अभिव्यक्त करे।।26।।
तीर्थराज सम्मेद शिखर तो, जैनों की रजधानी है।
भारत भर के जैनो का यह, तीर्थ महा कल्याणी है।।27।।
जिन मंदिर से भरा क्षेत्र यह, ऊपर नीचे सोह रहा।
पूजा भक्ति स्वाध्याय व्रत, मुनि दर्शन मन मोह रहा।।28।।
चारों ओर से जैनी बंधु, यात्रा करने आते हैं।
ध्वजा चढ़ाते छत्र चढ़ाते, अर्घ चढ़ा हर्षाते हैं।।29।।
मंत्र जाप पूजा से गुंजित, पर्वत मंगलकारी है।
मनोकामना पूरण होती, श्रद्धाफल अति भारी है।।30।।
एक अरब बारह कोटि फल, उपवासों का मिलता है।
चार कोटि प्रोषध का फल भी, सर्व कष्ट को हरता है।।31।।
सिद्ध क्षेत्र निर्वाण भूमि या, शाश्वत धाम कहाता है।
तीर्थराज सम्मेद शिखर से, जैनों का ही नाता है।।32।।

इसकी महिमा गरिमा को हम, निज भक्ति से बढ़ायेंगे।
पावनता नैतिकता मन धर, तीरथ स्वच्छ बनायेंगे।।33।।
बाहर निर्मल भीतर निर्मल, निर्मल शाश्वत धाम है।
तीर्थराज सम्मेद शिखर को, बारम्बार प्रणाम है।।34।।

दोहा

तीर्थराज सम्मेद शिखर, वंदु मन वच काय।
'सौरभ सागर' भक्ति कर, निश्चय शिव सुख पाय।।

देव-शास्त्र-गुरु तीर्थ वंदना

दोहा- **परमेष्ठी श्रुत बीस जिन, तीस चौबीसी ध्याय।**
अकृत्रिम जिनराज भज, सिद्ध भूमि सिर नाय।।

पंचपरम गुरु परमेष्ठी हैं, पूज्य पुरुष अरिहंत मुनि।
सिद्ध निरामय निराकार हैं, अष्ट कर्म के कष्ट हनि।।1।।
आचारज उवज्झाय साधुगण, ज्ञानध्यान तप लीनयति।
णमोकार नित जपकर करता, चरण वंदना जैनमति।।2।।
ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व प्रभो
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांश पद, वासु विमलानन्त नमो।।3।।
धर्म शान्ति कुन्थु अरनाथा, मल्लि मुनिसुव्रत नमि जपूं।
नेमी पारस महावीर जी, वर्तमान चौबीसी भंजू।।4।।
तीर्थराज सम्मेद शिखर जी, अष्टापद पावा गिरनार।
चम्पापुर सह ढाई द्वीप की, मोक्ष भूमि बन्दूँ शतवार।।5।।

सीमंधर से अजितवीर्य तक, विद्यमान श्री बीस जिनेश।
क्षेत्र विदेह में देह रहित हो, हरते सारे कर्म क्लेश॥6॥
आठ कोटि अरुँ छप्पन लक्षा, सत्तावन हज्जार कहें।
चार शतक इक्यासी प्रतिमा, नमन उन्हें शतवार करें॥7॥
जिनप्रतिमा अकृत्रिम जग में, दिव्य रूप है वृहद विशाल।
ऊर्ध्व अधो अरुँ मध्य लोक के, जिन प्रतिमा बन्दूँ त्रयकाल॥8॥
ऐरावत और भरत क्षेत्र के, तीर्थंकर गुणगान करूँ।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीस चौबीसी ध्यान धरूँ॥9॥
प्रभु पूजन दर्शन वंदन से, निद्धत निकाचित कर्म कटें।
अनुपम आत्मिक अव्यय सुख का, सूरज निज आतम प्रगटें॥10॥
दिव्य ध्वनि की निर्मल वाणी, माँ जिनवाणी कहलाती।
दिव्य ज्ञान दे अन्तर्मन की, कल्मषता सब धो जाती॥11॥
परमेष्ठी जिनवाणी माता, क्षेत्र विदेह के बीस जिनेश।
सिद्ध भूमि अकृत्रिम प्रतिमा, तीस चौबीसी के तीर्थेश॥12॥
देव शास्त्र गुरु तीरथ भूमि, तीर्थंकर को सदा नमूँ।
अर्घावली चरणों में देकर, शुद्धातम को सदा भजूँ॥13॥

दोहा- कर्म रहित जिनदेव की, भक्ति करे कल्याण।
"सौरभसागर" नित नमे, पाने शाश्वत धाम॥

श्री पद्मप्रभु चालीसा

शीश नवा अरिहंत को, सिद्धन करूँ प्रणाम।
उपाध्याय आचार्य का, ले सुखकारी नाम॥

सर्व साधु और सरस्वती, जिन मंदिर सुखकार।
पद्मपुरी के पद्म को, मन मंदिर में धार॥

जय श्री पद्मप्रभु गुणधारी, भविजन के तुम हो हितकारी।
देवों के तुम देव कहाओ, पाप भक्त के दूर हटाओ॥
तुम जग में सर्वज्ञ कहाओ, छट्टे तीर्थंकर कहलाओ।
तीन काल तिहुँ जग की जानो, सब बातें क्षण में पहचानों॥
वेष दिगम्बर धारण हारे, तुम से कर्म शत्रु भी हारे।
मूर्ति तुम्हारी कितनी सुन्दर, दृष्टि सुखद जमती नासा पर॥
क्रोध मान मद लोभ भगाया, राग द्वेष का लेश न पाया।
वीतराग तुम कहलाते हो, सब जग के मन को भाते हो॥
कौशाम्बी नगरी कहलाये, राजा धारण जी बतलाये।
सुन्दर नार सुसीमा उनके, जिनके उर से स्वामी जन्मे॥
कितनी लम्बी उमर कहाई, तीस लाख पूरब बतलाई।
इक दिन हाथी बँधा निरख कर, झट आया वैराग्य उमड़कर॥
कार्तिक सुदी त्रयोदशि भारी, तुमने मुनि पद दीक्षा धारी।
सारे राजपाट को तज के, तभी मनोहर वन में पहुँचे॥
तप कर केवल ज्ञान उपाया, चैत सुदी पूनम कहलाया।
एक सौ दस गणधर बतलाये, मुख्य वज्र चामर कहलाये॥
लाखों मुनि आर्यिका लाखों, श्रावक और श्राविका लाखों।
असंख्यात तिर्यञ्च बताये, देवी देव गिनत नहीं पाये॥
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, शिव रमणी को ली परणा कर।
पंचम काल महा दुखदाई, जब तुमने महिमा दिखलाई॥

जयपुर राज ग्राम बाड़ा है, स्टेशन शिवदासपुरा है।
मूला नाम जाटका लड़का, घर की नींव खोदने लागा॥
खोदत खोदत मूर्ति दिखाई, उसने जनता को बतलाई।
चिन्ह कमल लख लोग लुगाई, पद्मप्रभु की मूर्ति बताई॥
मन में अति हर्षित होते हैं, अपने दिल का मल धोते हैं।
तुमने यह अतिशय दिखलाया, भूत प्रेत को दूर भगाया॥
भूत प्रेत दु:ख देते जिसको, चरणों में लेते हो उसको।
जब गंधोदक छींटे मारे, भूत प्रेत तब आप बकारे॥
जपने से जब नाम तुम्हारा, भूत प्रेत वो करे किनारा।
ऐसी महिमा बतलाते हैं, अन्धे भी आँखें पाते हैं॥
प्रतिमा श्वेत वर्ण कहलाये, देखत ही हिरदय को भाये।
ध्यान तुम्हारा जो धरता है, इस भव से वह नर तरता है॥
अन्धा देखे गूंगा गावे, लँगड़ा पर्वत पर चढ़ जावे।
बहरा सुन-सुन कर खुश होवे, जिस पर कृपा तुम्हारी होवे॥
मैं हूँ स्वामी दास तुम्हारा, मेरी नैय्या कर दो पारा।
चालीसे को 'चन्द्र' बनावे, पद्मप्रभु को शीश नवावे॥

सोरठा

नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय सुगन्ध अपार, पद्मपुरी में आय के॥
होय कुबेर समान, जनम दरिद्री होय जो।
जिसके नहिं संतान, नाम वंश जग में चले॥

जाप:-ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय नम:।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्तुति

हे वीर प्रभो महावीर प्रभो, तेरे चरणों में आया हूँ।
सब पाप ताप संताप हरो, मैं अर्चन कर हर्षाया हूँ।।
आओ आओ प्रभु एक बार, मेरे मन का प्रक्षाल करों।
हे महाश्रमण हे वर्धमान, तुम सन्मति दे जंजाल हरों।।
प्रभु मंशापूरण करते हो, प्रभु संशय तिमिर भी हरते हों।
मैं मन से पूजा तेरी करूँ, सुख सिन्धु से भी भरते हों।।1।।
श्रद्धा का जल कर में लेकर, भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरूवर पावन, दीप धूप वन्दन भाया।।
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु, आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की, पूजा कर सुख पाऊँगा।।2।।
महामना हे महामुनि हे, महायोगी महाज्ञानी हो।
महाशक्ति हे महाज्योति हे, महाप्रभु महादानी हो।।
महाव्रतों को महाभाव से, महावीर ने धार लिया।
मंशापूरण महावीर बन, मानव का उद्धार किया।।3।।
भावों की शुभ निर्मलता ही, भव बन्धन को नित काटें।
निज स्वभाव में रम जा चेतन, खोल राग की सब गाठें।।
भाव-साधना-भाव-समाधी, भाव स्वभाव मे लीन रहें।
द्रव्य भाव द्वय अर्घ्य समर्पित, श्रद्धालय में लीन रहें।।4।।
अन्तिम गर्भ हो चरमोत्तम तन, महावीर-सा बन जाऊँ।
महाअर्घ चरणाम्बुज देकर, वज्र कर्म सब विनशाऊँ।।
तीर्थंकर का गर्भाराधन, गर्भ दोष का नाश करे।
त्रय ज्ञानी समकित तीर्थंकर, धर्मात्मक उल्लास भरे।।5।।

जन्म काल का अतिशय सुखकर, तीर्थंकर ही पाते हैं।
कल्याणक शुभ जन्म मनाकर, नर देवा हर्षाते हैं।।
जन्म मरण की भ्रमण शृंखला, तब पूजा से घट जाये।
अर्घ समर्पित तव चरणों में, मोह तिमिर सब छट जाये।।6।।
वर्धमान अतिवीर वीर जिन, महावीर शुभ नाम कहो।
सद्बुद्धि सन्मार्ग प्रदाता, सन्मति का गुणगान अहो।।
राग-द्वेष मद लोभ मोह सब, नामोच्चारण दूर करें।
अर्घ समर्पित मंशापूरण, धर्मभाव भरपूर भरे।।7।।
दीर्घ साधना कर्म निर्जरा, धर्म ध्यान से नित साधें।
तन मन की इच्छा ज्वाला को, शुक्ल ध्यान जल से नाशें।।
महावीर की वीतरागता, निर्मल-निच्छल-मनहारी।
पूर्णअर्घ चरणों मे अर्पित, वर्धमान दीक्षाधारी।।8।।
केवलज्ञानी अतिशय धारी, चार घातियाँ नाश किया।
प्रातिहार्य आठों सज्जित है, समवशरण प्रवास किया।।
विपुलाचल वैभार गिरी या, पुण्यवान जग जीव जहाँ।
दर्शन पूजन व्रत उपदेशा, पाकर तिरते जीव यहाँ।।9।।

दोहा— अल्पज्ञान लब्ध्यक्षरा, पूरण केवल ज्ञान।
महावीर की देशना, करें आत्म कल्याण।।10।।

भू भीतर देवों द्वारा ही, पूजा सेवा नित होती।
वर्षों तक ना पुण्योदय था, दर्शन फिर कैसे होती।।
सात नवम्बर भू से प्रगटे, मंशापूरण श्री भगवान।
अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति गाऊँ, वर्धमान महावीर महान।।11।।

भक्ति में तन्मय हो करके, चिन्मय मुरत पाया है।
सिद्ध निरामय निर्मल निश्चल, अविनाशी सुख पाया है॥
हो विरक्त जग उलझन से प्रभु, तेरे दर पर आऊँगा।
आत्म ओज का उद्भव होवे, महावीर गुण गाऊँगा॥12॥
सुख राशि गुणदाता जिनवर, दया सिन्धू महावीर प्रभो।
विघ्न हरण हे मंशापूरण, वर्धमान अतिवीर विभो॥
परमेश्वर हो, प्रतिपालक हो, जिन शासन के नायक हो।
महा-अर्घ्य चरणों मे अर्पित, सौरभ सागर ज्ञायक हो॥13॥

दोहा- महावीर जिनराज का, अद्भुत है दरबार।
भक्ति से पूजा करूँ, नमन करूँ शतबार॥14॥

धत्ता – जय जय महावीरा भवदधि तीरा, गुण गंभीरा अतिवीरा।
मम धर्म बढ़ावे जिनपद पावें, सौरभ सागर नत धीरा॥

श्री मंशापूर्ण महावीर चालीसा

अरिहंतों और सिद्धों को, सदा मैं मन से ध्याऊँ।
उपाध्याय आचार्यों को, भाव से शीश नवाऊँ॥
सर्व साधु वंदू सदा, जिनवाणी माँ साथ।
मंशा पूर्ण वीर जी, तुम्हीं हमारे नाथ॥

जय वीरा महावीरा स्वामी, तुम हो प्रभुवर केवल ज्ञानी।
माँ त्रिशला के उर में आए, अष्ट देवियाँ खुशी मनाए॥1॥
हीरे मोती बरसन लागे, सकल प्रजा के भाग थे जागे।
चैत्र शुक्ल त्रयोदश को जन्मे, सिद्धारथ हरषे बहु मन में॥2॥

जाति स्मरण वैराग्य जागा, तीस वर्ष में घर को त्यागा
संयम पथ पर कदम बढ़ाए, धन वैभव भी रोक ना पाए॥3॥
वैशाख शुक्ल दशमी दिन आया, केवलज्ञान का आनन्द पाया।
अष्ट कर्म का नाश किया था, कार्तिक मावस मोक्ष भया था॥4॥
पंचम काल महा दु:ख दाई, पर जो हो तेरी शरणाई।
उससे संकट दूर ही रहते, भूत प्रेत सब दूर हैं भगते॥5॥
हरियाणा इक प्रान्त है प्यारा, झज्जर निकट झाडली ग्रामा।
धरती की हो रही खुदाई, कस्सी जाकर के टकराई॥6॥
खोदत खोदत मूरत दिखाई, हैरानी और खुशियाँ छाई।
सात नवम्बर दिन पुण्यशाली, वीरा ने झोली भर डाली॥7॥
ग्रामीणों को लगे खिलौना, अर श्रावक को वीर सलोना।
चहुँ दिशि शोर मचा था भारी, भू से प्रकटे मंगलकारी॥8॥
ग्रामीणों को मूरत भाई, ना देने की रटत लगाई।
'गुरु सौरभ' ने चित्र निहारा, तभी बही अतिशय की धारा॥9॥
दर्शन को मन तरस रहा था, आ जाओ वीरा बोल रहा था॥
निसवासर वीरा को जपते, फिर भी गुरुवर जरा ना थकते॥10॥
गुरुवर की मेहनत रंग लाई, अर वीरा को खींच के लाई।
ज्ञान योगी गुरुदेव ने जाना, मंशा पूर्ण हैं भगवाना॥11॥
गुरु भक्तों ने रंग जमाया, वर्द्धमान वीरा को पाया।
29 मार्च का शुभ दिन आया, सहस्त्र कलश से न्हवन कराया॥12॥
दूर-दूर से भक्त हैं आए, वीर प्रभु का दर्शन पाए।

ये बारह सौ बरस पुरानी, महिमा इसकी सबने जानी॥13॥
मनहारी और है सुखकारी, ये वीरा हैं अतिशय कारी।
माखन ज्यों सिंदूर मिला है, ऐसा तेरा रूप खिला है॥14॥
प्रातिहार्य के मध्य विराजे, वीरा तो सूरज सम लागे।
रोग शोक भय सब भग जावे, जो श्रद्धा से शीश नवावे॥15॥
गुरु सौरभ जी भक्त तुम्हारे, मनोभाव से चरण पखारे।
दर दर की ठोकर हम खाए, आज प्रभु तेरे दर आए॥16॥
मेरा सोया भाग जगा दो, आत्म परमात्म से मिला दो।
हम संसारी मन चंचल है, पर जिनवर तू बड़ा सरल है॥17॥
वरद हस्त मम शीश पे धरना, खुशियों से झोली तू भरना।
शुद्ध भाव से जो जपता है, अन्तर का कोना खिलता है॥18॥
'आशा' ने प्रयास किया है, भक्ति भाव से भजन किया है।
सुख वैभव की वर्षा कर दो, मन में प्रेम का अमृत भर दो॥19॥
हृदय कमल पर आन विराजो, मुक्ति रमा से मिलन करा दो।
अतिशय अपना तुम दिखलाओ, वीरा हमको पार लगाओ॥20॥

पाठ करो चालीस दिन, दीपक पास जलाय।
चालीस बार अखंड कर, ले मंशा पूर्ण मनाय॥
ऋद्धि सिद्धि की निधि मिले, कमी रहे ना कोय।
रोग शोक सब दूर हो, जीवन मंगल होय॥

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ठें ॐ मंशापूर्ण महावीर जिनेन्द्राय सुख-सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

श्री 1008 मंशापूर्ण महावीर आरती

हृदय में बसने वाले, विघनों को हरने वाले।
मंशा पूर्ण वीरा की आरती, हो वीरा हम सब उतारें तेरी आरती...

वर्द्धमान को जन्म दिया, त्रिशला माता कहलाई,
सिद्धारथ ने जन्म पे तेरे, मोहरे खूब लुटाई तेरी,
तेरी सूरत है मनहारी, लगती बड़ी प्यारी-प्यारी, हम सब उतारें...

हरियाणा के झाडली ग्राम में, प्रकट भए तुम स्वामी,
गुरु सौरभ ने जाप्य मन्त्र से, तुम्हें बुलाया स्वामी,
मंशा, पूरण करने वाले, संकट सब हरने वाले, हम सब उतारें...

सोने जैसा रूप तुम्हारा, मन को पुलकित करता,
जो पूजे तुम्हें मनोभाव से, उसका संकट कटता,
तूने, चन्दन बाला को तारा, हमको तेरा ही सहारा, हम सब उतारें...

सुनते आए है तुमने, लाखों को पार उतारा,
हम भी तेरे दर पे आए, कर दो भव से पारा,
करमो, ने हमको घेरा, तू ही कर दूर अंधेरा, हम सब उतारें...

तेरी प्रतिमा इतनी मोहक, मन को खूब लुभाए,
एक शिल्पी की मेहनत ने, हम सबका भाग जगाए,
आशा पूरी तू सबकी करना, खुशियों से झोली भरना, हम सब उतारें...

माँ जिनवाणी वन्दना

समवशरण में तीर्थंकर की, दिव्य ध्वनि तन से खिरती।
द्वादशांग-मय गणधर द्वारा, शब्द अर्थ हो नित कहती।।
परम ब्रह्म और शब्द ब्रह्म का, मेल जिनागम कहलाता।
संशय-विभ्रम नाशन हेतु, अध्ययन आराधन भाता।।1।।
ऋषभदेव महावीर की वाणी, भुवन व्यापिनी मंगलकार।
वृषभसेन से गौतम स्वामी, अर्थ बता करते उद्धार।।
पूर्वापर अविरुद्ध वाग्मय, शब्द रूप संबोध करें।
सम्यग् दर्शन ज्ञान-चरित दें, भव्य जीव का शोध करें।।2।।
जन्म दायिनी माता जग में, जन जीवन सिखलाती है।
माँ जिनवाणी जन जीवन से, मुक्ति बोध कराती है।।
है संसार असार विषय सुख, ऐसा ज्ञान प्रदान करो।
सरस्वती माँ सरसमति दे, जीवन का कल्याण करो।।3।।
भव्य शरण्या भक्त वत्सला, ज्योतिर्मय जिन मुख वासी।
अनेकांत संभाषिणी माता, नय प्रमाण मय विश्वासी।।
ग्यारह अंगम्-चौदह पूर्वम्, द्वादशांग मय शास्त्र नमो।
सत्याभाषी मिथ्यानासी, केवल ज्ञानी पात्र नमो।।4।।
महावीर की दिव्य ध्वनि तो, ग्यारह गणधर ने झेली।
बासठ वर्षों तक क्रम केवली, अनुबद्ध हो कर फैली।।
पंच केवली श्रुत में आकर, द्वादशांग विस्तार करें।
दशम पूर्व के ग्यारह मुनिवर, सर्व पाप निस्तार करें।।5।।
एक शतक तेईस वर्षों तक, ग्यारह अंग धरे मुनिराज।

अठ नव दश अंगों के धारी, तपसी थे चारों ऋषिराज॥
छः सौ तिरासी वर्षों तक, निर्ग्रन्थ महासंघ बना रहा।
असंख्यात निर्ग्रन्थ श्रमण से, जैन धर्म भी जमा रहा॥6॥
सिद्धान्तों की शुद्ध श्रृंखला, मुनियों से चलती आई।
ऋषभ देव से महावीर तक, तत्व द्रव्य कहती आई॥
द्वादशांगमय माँ जिनवाणी, ज्ञान सदा सुख दायी है।
"आचारांग" या "सूत्र कृतांगम्", धर्म भाव विकसायी है॥7॥
जीव राशि किस-किस योनि में, "स्थानांग" बताता है।
"समवायांग" या "व्याख्या प्रज्ञप्ति", समाधान कर जाता है॥
मुनिराजों की "ज्ञातृ कथा" जो, श्रद्धाभाव जगाते हैं।
"उपासकाध्यनांग" सदा ही, त्याग भाव बढ़ाते हैं॥8॥
"अंतकृत" दश "अनुत्तरं" अरुँ, "प्रश्न व्याकरण" का सुज्ञान।
"सूत्र विपाक" भी श्री जिनवाणी, "दृष्टि वाद" है पूर्ण विज्ञान॥
एक सौ बारह कोटि से भी, लाख तिरासी ज्यादा है।
अट्ठावन हज्जार पदों से, पाँच अधिक पद गाथा है॥9॥
एक अंग के धारी मुनिवर अर्हत्बली शुभ नाम कहो।
महाज्ञान धारी "धरसेना", मंत्र ज्ञान से युक्त अहो॥
दो शिष्यों को पास बुलाकर, मंत्र सिद्ध था करा दिया।
"महाकम्म पयडि पाहुड" का, दिव्य पाठ भी पढ़ा दिया॥10॥
महामनस्वी पुष्पदंत ने, "महामंत्र णमोकार" लिखा।
एक सौ सत्तहतर सूत्र ज्ञान में, जीव द्रव्य संसार दिखा॥
"पुष्पदन्त" अरुँ "भूतबली" ने, आगम का रस पिला दिया।
षट्खण्डागम् ग्रन्थ प्रगट कर, जैन धर्म को खिला दिया॥11॥

"षट्खण्डागम्" जैन धर्म का, मूल ग्रन्थ और मंत्र कहा।
जैनागम का सूर्योदय था, "श्रुत पंचमी" पर्व महा।।
उसी ज्ञान की अविरल धारा, ग्रन्थों में चलती आई।
णमोकार का आश्रय लेकर, शास्त्रों में ढलती आई।।12।।
अर्हन्तों की ॐ ध्वनि का, द्वादशांग में सार है।
तीर्थंकर परमेष्ठी वाणी, करती जग उद्धार है।।
जिनवाणी का अक्षर अक्षर, मंत्र रूप हो जाता है।
पत्रों पर अंकित होकर के, द्रव्य ग्रन्थ कहलाता है।।13।।
आगम के त्रय अक्षर हमको, "आप्त" ध्वनि बतलाते हैं।
"गणधर" द्वारा भाव ग्रन्थ रच, द्वादशांग कह जाते हैं।।
म अक्षर "मुनियों" का वाचक, द्रव्य ग्रन्थ प्रस्तुत कर्ता।
षट्खण्डागम् जय हो तेरी, पूजा कर सब दुख हर्ता।।14।।
सरस्वती जिनवाणी माता, हंस वाहिनी नाम तेरा।
तिमिर हारिणी ब्रह्मचारिणी, वाग्वादिनी नमन मेरा।।
जिनवाणी के जिनवचनों की, निज वचनों से गुण गाऊँ।
द्वादशांग मय 'सौरभ सागर', ज्ञानानन्द में खो जाऊँ।।15।।

दोहा– **जिनवाणी जिनदेव की, दिव्यध्वनि सुखकार।**
सम्यक ज्ञान बढ़े सदा, गा गा मंगलाचार।।

● ● ●

पृथ्वी में नीम के वृक्ष बहुत दिखाई देते हैं। पत्थरों से पृथ्वी भरी पड़ी है परंतु चिंतामणि दुर्लभ है कौओं की काँव-काँव सदा सुनाई पड़ती है परंतु कोयल की कूक चैत्र में सुनाई पड़ती है इससे ऐसा प्रतीत होता है कि यह जगत् दुर्जनों से व्याप्त है। सज्जन तो पृथ्वी पर दो चार ही हैं।

आचार्य पुष्पदन्त गुरु वंदना

पुष्पदन्त गुरूदेव को, वन्दन बारम्बार।
महासन्त गुणगान कर, करूँ आत्म उद्धार॥

मंगल मूरत दिव्य स्वरूपी, भव्यों के मनहारी हैं।
राग तजें वैराग भजें, गुरु पुष्पदंत उपकारी हैं॥
जीवन को जीवन्त बनाने, मोक्ष मार्ग स्वीकार किया।
महातपस्वी ज्ञान मनीषी, मम जीवन उद्धार किया॥

जय पुष्पदंत गुरु सन्त आप, जय धर्म मार्ग के सूर्य आप।
जय पर उपकारी दिव्य रूप, जय करुणाधारी गुण अनूप॥1॥
जय श्रमण संस्कृति के नेता, जय त्याग रूप इन्द्रिय जेता।
जय रत्नत्रय धारी महान, जय धर्म धुरंधर ज्ञानवान॥2॥
जय जय जय जय गुरु पुष्पदंत, जय हो जय हो जय जैन सन्त।
जय जय जय जय गुरु पुष्पदंत, जय हो जय हो जय जैन सन्त।3॥
है कोमल पितु मथुरा माता, पर उनसे ना तेरा नाता।
जब उमर हुई छब्बीस साल, मुनि दीक्षा ले निज को सँभाल॥4॥
गुरु विमल सिन्धु ने दी दीक्षा, अपनी क्षमता से ली शिक्षा॥
फिर नगर नगर विहार किया, जैनागम को विस्तार दिया।5॥
गुरु जय हो जय हो जय तेरी, गुरु मेटो भव भव की फेरी॥
गुरु जय हो जय हो जय तेरी, गुरु मेटो भव भव की फेरी॥6॥
गुरु भारत भर में भ्रमण किया, सबने धर्मामृत श्रवण किया।
गुरु भवोदधि के तारक हो, गुरु भक्तों के उद्धारक हो॥7॥
गुरु दीर्घ तपस्वी तीरथ हो, तप त्याग की अद्‌भुत मूरत हो।
गुरु भ्रम के जाल हटाते हो, गुरु मोक्ष मार्ग प्रगटाते हो॥8॥

गुरु पुष्पदंत की जय बोलो, जय बोलो हिय के पट खोलो।
गुरु पुष्पदंत की जय बोलो, जय बोलो हिय के पट खोलो।।9।।
तुम पंच महाव्रत धारी हो, तुम क्षमा शील अवतारी हो।।
तुम संघर्षों में हँसते हो, तुम उपसर्गों को सहते हो।।10।।
तुम निस्पृह योगी ज्ञाता हो, तुम अपने भाग्य विधाता हो।।
तुम अद्‌भुत हो तुम अनुपम हो, तुम मम जीवन के दर्पण हो।।11।।
जय हो जय हो जय गुणवन्त, जय हो जय हो जय निर्ग्रन्थ।।
जय हो जय हो जय गुणवन्त, जय हो जय हो जय निर्ग्रन्थ।।12।।
जो भव्य निकट आ भक्ति करे, वह दिव्य ज्योति से शक्ति वरे।
मैं हूँ तेरा छोटा बालक, गुरु आप कृपा सिन्धु पालक।।13।।
गुरु तेरी पूजा करता हूँ, अपने दुर्गुण को तजता हूँ।
गुरु वरद हस्त सिरपर रख दो, मुझको निज संयम से भर दो।।14।।
जय संयमधारी ज्ञानवन्त, जय वर्तमान के श्रेष्ठ सन्त।
जय संयमधारी ज्ञानवन्त, जय वर्तमान के श्रेष्ठ सन्त।15।।
मैं अर्घ चढ़ा विनती करता, तेरे पथ चलकर ही तरता।
मैं शक्ति हीन अनुरागी हूँ, तुम शक्तिवान वैरागी हो।।16।।
मम अन्तर मन प्रक्षाल करो, मम जीवन को खुशहाल करो।
गुरु जयकारा तेरी करता, 'सौरभ' सुरभित हो भव तरता।।17।।
जय कृपा निधाना दिव्य संत, जय जय गुरुवर श्री पुष्पदंत।।
जय कृपा निधान दिव्य संत, जय जय गुरुवर श्री पुष्पदंत।।18।।

दोहा

महाश्रमण महावीर के, प्रतिनिधी हो आप।
'सौरभ सागर' नित नमें, हरने जग संताप।।

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की पूजा

स्थापना

सौरभ सागर गुरु को, नमन हो बारम्बार।
श्रद्धा पुष्प चढ़ा रहे, करना तुम उद्धार।।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो, सौरभ सागर महाराज।
जिह्वा गुण गाती रहे, हो मुनिवर सरताज।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज अत्र अवतर-अवतर संवौष्ट आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

रगड़ रगड़ कर ये तन धोया, मन का मैल ना धो पाए।
इसीलिए तो गुरुवर क्षीरोदधि, से जल लेकर आए।।
निर्मल जल अर्पित करते हैं, जन्म जरामृत नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

तरह तरह के लेप किए पर, तन संताप ना दूर हुआ।
जितना इसका शमन किया यह, उतना ही फिर और बढ़ा।।
मलयागिर चन्दन अर्पित तुमको, भव संताप को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

संसार दु:खों से भरा हुआ, नहीं मिलता मुझे किनारा है।
मोह माया से जकड़ा जीवन, पर ना कोई सहारा है।।
उज्जवल अक्षत अर्पित तुमको, इनको तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम वेग से घिरे हुए हैं, कैसे बन्धन तोड़े हम।
तरह तरह के इत्र लगाए, इन्द्रीय दास बने हैं हम।।
कोमल पुष्प समर्पित तुमको, काम बाण को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

नाना मिष्ट पकवान डकारे, फिर भी क्षुधा ना शान्त हुई।
जिव्हा के वश होकर मैंने, भक्ष अभक्ष की सुधि खोई।।
सरस नैवेद्य अर्पित तुमको, क्षुधा रोग को ध्वस्त करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में क्षुधा रोग विनाशनाय-नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

अज्ञान तिमिर ने हमको घेरा, कैसे मंजिल पाएंगे।
तेरे ज्ञान की ज्योति पाकर, सहज पार हो जाएंगे।।
ज्ञान से ज्ञान की ज्योति जलती, दीपक तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

अष्ट कर्म की दलदल में हम, हरदम फंसते जाते हैं।
पाप कर्म हम करते रहते, फल से नहीं घबराते हैं।।
धूप समर्पित तव चरणों में, अष्टकर्म का दहन करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

लौंग बादाम और किशमिश लेकर, तेरे द्वारे आए हैं।
मोक्ष के फल का स्वाद बता दो, इच्छा मन में लाए हैं।।
फल अर्पित है चरण तुम्हारे, मुक्ति रमा का वरण करूँ।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोक्ष फल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प नैवेद्य, दीप धूप फल ले आए।
तब चरणों में अर्घ चढ़ा के, अष्टम वसुधा पा जाए।।
हम अर्घ समर्पित करते हैं, गुरुवर तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ-पद-प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **भव भव से भटके फिरे, कोई ना तारनहार।**
सौरभ सागर गुरु मेरे, तुम ही करो उद्धार।।

जयमाला

लय (दे दी हमें आजादी....)

सौरभ सागर जी देव, गुरुदेव हमारे।
करते हैं भव से पार, गुरुदेव हमारे।।
माँ चन्द्रप्रभा कोख में, जब आप थे आए।
शुभ स्वप्न देख माता भी, फूली ना समाए।।
गज, सर्प, आग, सूर्य भी, देख लिया था।
अद्वितीय पुत्र जन्मेगा, ये जान लिया था।।1।।
जसपुर में गुरुदेव, तुमने, जन्म लिया था।
जसपुर की माटी को भी, तूने धन्य किया था।।
गुरू पुष्पदंत संघ, जसपुर में पधारे।
बालक सुरेन्द्र पुष्प संग, चल दिया प्यारे।।2।।
तपअग्नि में बारह वर्ष, गुरूदेव तपाया।

मैं भी बनूँ तब सम, गुरु ये मन में है भाया॥
आचार्य गुरुदेव ने, सौरभ बना दिया।
मुनिबाने से गुरुदेव ने, तुमको सजा दिया॥3॥
बाली उमर से सौरभ जी, अमृत पिला रहे।
आहत भी राहत पाके, आशीष पा रहे॥
संस्कार अलख देव, जन जन में जगाए।
संस्कार प्रणेता तभी, गुरुदेव कहलाए॥4॥
सृजन किया गुरुदेव ने, रचना कई लिखी।
सिद्धान्त शतक एक है, नायाब नव कृति॥
जिसने भी गुरुदेव का, साहित्य पढ़ा है।
जैनत्व बोध करके, उसका पाप कटा है॥5॥
बच्चों व शिक्षकों को, चमड़ा मुक्त किया है।
सौरभाँचल तीर्थ का, उपहार दिया है॥
हिसार की नसिया का, भी उद्धार है किया।
मनहर पारस क्षेत्र नाम, उसको दे दिया॥6॥
भू गर्भ में दबे थे, आदि पार्श्व अर वीरा।
अपने ज्ञान योग से, तुम जान लिया था॥
ज्ञान योगी देव गुरूदेव कहाए।
गुरूदेव के जयकार से गगन गुंजाए॥7॥
झज्जर के ग्राम झाडली में वीर थे प्रकटे।
ना देगे वीर मूर्त, ग्रामवासी अड़ गए॥
भक्ति की शक्ति से, महावीर बुलाए।
मंशा पूर्ण वीर, महावीर कहलाए॥8॥

पुष्पगिरी तीर्थ अप्रैल दश महा।
मेला लगा दृश्य अनुपम रहा महा।।
चारों दिशाएं गुंज उठी नमस्कार से।
आचार्य पद प्रतिष्ठा हुई जयजयकार से।।9।।
हम भी तो तेरे दर पे, अरदास लाए हैं।
दर्शन तिहारे मिलते रहे, प्यास लाए हैं।।
जीवन में मेरे 'आशा' की, तुम ज्योत जगा दो।
सुना है तेरा नाम, मेरी बिगड़ी बना दो।।10।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **सौरभ सागर गुरु का, करूँ हमेशा ध्यान।**
भक्त की हर श्वास में, सौरभ सागर नाम।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आचार्य श्री सौरभ सागरजी का अर्घ

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन शृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी आचार्य श्री 108 सौरभ सागर चालीसा

मनमंदिर में आन बसे, सौरभ सागर महाराज।
धर्म की राह दिखा दई, और सँवारे काज॥
ऐसे गुरु का यदि रहे, भक्त के सिर पर हाथ।
रोग शोक सब दूर रहे, सुख की हो बरसात॥

सौरभ सागर गुरु हमारे, भक्तों के सब कष्ट निवारे।
ये गुरुवर है अन्तर्यामी, मन की सारी बाते जानी॥
मनमोहक मुस्कान तुम्हारी, छवि तुम्हारी है मनहारी।
चन्द्रप्रभा जी की कोख में आए, शुभ लक्षण उनको दर्शाए॥
उगता हुआ इक सूरज देखा, सर्पो का एक जोड़ा देखा।
इक जंगल में आग भी देखी, हाथी की इक जोड़ी देखी॥
श्री पाल जी को स्वप्न बताए, फल जाना तो बहु हरषाए।
पुत्र रत्न इक घर आएगा, दावानल सा यश पाएगा॥
मस्त हस्ती सम भ्रमण करेगा, सूरज सम जग में चमकेगा।
बाबा की आँखों का तारा, सुरेन्द्र नाम लगता था प्यारा॥
गुरु पुष्प संघ जसपुर आया, इस बालक का भाग जगाया।
अद्भुत प्रतिभा देखी तुझमें, ज्ञानयोगी इक छिपा था तुझमें॥
पिता से तुमको मांग लिया था, मात पिता ने सहर्ष दिया था।
तप अग्नि में तुम्हें तपाया, बारह बरस का समय बिताया॥
क्षमावाणी का शुभ दिन आया, दीक्षा धारूँ ये था भाया।
21 सितम्बर दिन पुण्यशाली, होती गुरु की दीक्षा दिवाली॥
चहुँ दिशि अम्बर बने तुम्हारे, वीतरागी मुद्रा जब धारे।

वाणी तेरी शीतल चन्दन, शीघ्र मिटाती मन का क्रन्दन॥
जिस नगरी भी कदम बढ़ाए, अतिशय अपने खूब दिखाए।
धर्म की ऐसी अलख जगाई, 'संस्कार प्रणेता' उपमा पाई॥
जेल में जो उपदेश सुनाए, मद्य माँस से लोग छुड़ाए।
जब बच्चे उपदेश हैं सुनते, शहद ब्रैड व चमड़ा तजते॥
जिस नगरी भी किया चौमासा, भक्तों के मन भर दी आशा।
निर्बल तुझसे बल पा जाए, वीराने हरियाली पाए॥
जंगल में मंगल करते हो, संकट सारे तुम हरते हो।
जिस पर होती कृपा तुम्हारी, उसकी तो किस्मत है सँवारी॥
एक प्रेरणा तुमसे पाई सौरभाँचल की नींव धराई।
सौरभाँचल एक तीरथ प्यारा, नव जिनग्रह का देख नजारा॥
वृहद आदि पद्मासन प्रतिमा, नीलाम्बर का लगा चँदोवा।
श्रुत स्कन्ध मंदिर बनवाया, द्वादशांग का मान बढ़ाया॥
रत्न चौबीसी मन को भाए, देख देख के हिय हरषाए।
सूनी थी हिसार की नशिया, पर भू भीतर दबी थी निधिया॥
अपने ज्ञान ध्यान से जाना, त्रय जिनदेवा भीतर जाना।
हाथों से मिट्टी खुदवाई 'पार्श्व' 'आदि' 'वीरा' छवि पाई॥
जयकारों से गगन गुँजाए, ज्ञानयोगी गुरुदेव कहाए।
'मनहर पारस क्षेत्र' कहाया, सहस्त्र कलश से न्हवन कराया॥
मंशापूर्ण श्री महावीरा, सेवा भाव जगावे धीरा।
जीवन आशा नाम पुकारा, विकलांगों का बने सहारा॥
ज्ञानी मन चिंतन करता है, हर पल काव्य ग्रन्थ लिखता है।
धर्म गगन में करे विहारा, "सिद्धांत शतक" आगम है प्यारा॥
सब शूलों की सेज उठाते, जैनत्वो का बोध कराते।

पापों के दहकते अंगारे, प्रेरक प्रवचन बुझाते सारे॥
फैशन एक अभिशाप बताया, गर्भपात से सबको बचाया।
जैन विधान सदा करवाते, भक्तों के शुभ भाव जगाते॥
ख्याति लाभ की नहीं कामना, पूजा की भी नहीं चाहना।
विज्ञापन से दूर ही रहते, चर्या सावचेत हो करते॥
आगम के रत्नाकर गुरुवर, शान्त सौम्य छवि सुन्दर गुरुवर।
आशीर्वाद गुरु का फलता, जीवन सहज सरल हो चलता॥
तीर्थराज सम्मेद शिखर है, श्री सौरभांचल का परिसर है।
सहस्र वर्ष प्राचीन है प्रतिमा, अतिशयकारी पारस महिमा॥
10 अप्रैल का शुभ दिन आया, पुष्पगिरी में उत्सव छाया।
रवि पुष्य नक्षत्र कहाया, पुष्पदन्त ने सूरी बनाया॥
देश विदेश से यात्री आये, दृश्य देखकर अति हर्षाये।
सौरभ गुरु को शीश नवाया, धन्य धन्य सौभाग्य जगाया॥
जिस धरती पर कदम बढ़ाए, वो माटी चन्दन बन जाए।
घर घर ज्ञान के दीप जलाए, अज्ञान तिमिर मन का हट जाए॥
दर्शन पा मन पुष्प खिला है, वर्द्धमान का दर्श मिला है।
जब से तेरा साथ मिला है, 'हम-सब' को भगवान मिला है॥

दोहा– सौरभ सागर चालीसा, मन से जो भी ध्याय।
त्याग धर्म बढ़ता रहे, गुरु अनुकंपा पाए॥
गुरुवर तेरे चरण में, नमन हो बारम्बार।
पापों का क्षय हो मेरा, भव से हो जाऊँ पार॥

(9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रूं सौरभ सागर गुरुवे नमः।

आरती आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की

(लय - तन डोले, मन डोले ...)

सौरभ सागर की, गुण आगर की
शुभ कंचन दीप सजाय के, आज उतारूँ आरतिया
माता चन्द्रप्रभा जी के जाये, श्रीपाल जी के सुत कहलाये
पुष्पदंत जी की बगिया से, ये कोमल पुष्प है आये
सुगन्धित कोमल पुष्प है आये
गुरु की सुरभि से सुरभित होकर कंचन दीप सजाय के ...
गुरु की छवि है इतनी निराली मन को बहुत लुभाती
महिमा गुरुवर के वचनों की जन-जन को हर्षाती
जय गुरुवर जन-जन को हर्षाती
इनके चरणन शत् शत् वन्दन शुभ कंचन दीप सजाय के...
जो भी इनकी शरण में आए, सब संकट कट जाये
हम भी भटके हैं जन्मों से हमको भी पार लगाये
हो जय गुरूवर, हमें भी पार लगाये
यह विनती करें तोसें अरज करें शुभ कंचन दीप ...

अर्घ-मंशापूर्ण महावीर स्वामी

श्रद्धा का जल कर में लेकर भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरूवर पावन दीप धूप वन्दन भाया।।
सिद्ध शिला फल चाह लिये मैं अष्ट द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की पूजा कर सुख पाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अर्घ-गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया॥
तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा

तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिन का भेष॥

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

अर्घ-आचार्य श्री सौरभ सागर जी

जल से घुलते कर्म हमारे, चन्दन से मिलती शीतलता।
पुंज चढ़े जब गुरु चरणों, में पुष्प सुगन्धित है देता॥
नैवेद्य चढ़ाकर क्षुधा नशाऊँ, निज ज्ञान का दीप जलाऊँ मैं।
धूप चढ़ाकर कर्म जलाऊँ, फल से मोक्ष फल पाऊँ मैं॥
आठों द्रव्यों को एक मिलाकर, गुरुवर के गुण गाऊँ मैं।
भव भव के सब पाप नशे, अरिहंत अवस्था पाऊँ मैं॥

ॐ ह्रूं संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी आचार्यश्री सौरभ सागर जी गुरुदेव चरणेभ्यो अन्घर्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ विशेष जाप

1. ॐ ह्रीं नमो अर्हते रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा अप्रतिहत-शक्ति भवतु ह्रीं नमः।
3. ॐ श्रीं ह्रीं अर्हं श्री नमः।
4. ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय सर्वसौख्यं कुरु कुरु नमः।
5. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआउसा अनाहत-विद्यायै णमो अरिहंताणं मम सर्व विघ्न शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं श्रीं वद् वद् वाग्वादिनी ह्रीं नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्टबुद्धिणं।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं।
9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः।
10. ॐ ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौं नमः।
11. ॐ ह्रीं ऐं क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं महालक्ष्म्यै नमः।
12. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं मम इष्ट कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीराय नमः रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

जीवन परिचय

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज

जन्म	:	कार्तिक कृष्णपक्ष अष्टमी (गुरुवार) 22 अक्टूबर, 1970 जसपुरनगर (छत्तीसगढ़)
बचपन का नाम	:	सुरेन्द्र कुमार
पिता का नाम	:	श्री श्रीपाल जैन
माता का नाम	:	श्रीमती चन्द्रप्रभा जैन
गृहत्याग	:	शुक्रवार, 08 अप्रैल, 1983
क्षुल्लक दीक्षा	:	शुक्रवार, 17 जनवरी, 1986 छत्तरपुर (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा	:	सोमवार, 27 जून, 1988 अंदेश्वर पार्श्वनाथ (राज.)
मुनि दीक्षा	:	21 सितम्बर, 1994 इटावा (उत्तर प्रदेश)
दीक्षा गुरु	:	पुष्पगिरि प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी महाराज
आचार्य पद	:	10 अप्रैल, 2022 (पुष्पगिरि)
राजकीय अतिथि	:	झारखंड, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड

:: विशेष कृति ::

1. सिद्धान्त शतक
2. जैनत्व का बोध
3. धर्म गगन में करें विहार
4. प्रेरक प्रवचन
5. फैशन एक अभिशाप
6. शूलों की सेज
7. दहकते अँगारे
8. आओ लौट चलें
9. पत्थर की मानवाकृति
10. प्रतिमा से प्रतिभा जगे
11. सृजन के द्वार पर
12. हे इन्सान! मत बन तू शैतान
13. जैन शिक्षा भाग-1, 2, 3, 4
14. आराध्य आराधना
15. मंगलं पुष्पदन्ताद्यो
16. जैनाचार संहिता
17. श्रावकाचार संहिता
18. श्रमणाचार संहिता
19. भक्ति-सौरभ
20. अर्हत् चरण सपर्या (जिन-देवार्चना)

विधान

21. श्री भक्तामर स्तोत्र
22. श्री कल्याण मन्दिर
23. स्वयंभू चौबीसी
24. श्री मंशापूर्ण महावीर
25. चौंसठ ऋद्धि सिद्धि
26. आचार्य पुष्पदन्तसागर
27. श्री सम्मेदशिखर
28. माँ जिनवाणी
29. कर्मदहन
30. श्री नवग्रह जिनदेव
31. श्री पुष्पगिरी तीर्थ
32. जैन विधान संग्रह

विधान पुस्तक प्राप्ति स्थल

सौरभांचल प्रकाशन

गणधर गारमेन्टस
IX/842, प्रेम गली नं. 3-सी,
मुलतानी मौहल्ला, सुभाष रोड,
गांधी नगर, दिल्ली-110031

मनोज कुमार जैन
E-17/9, कृष्णा नगर,
दिल्ली-110051
मो. : 9810056286

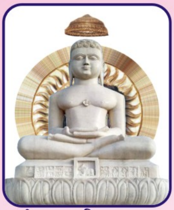
श्री 1008 आदिनाथ भगवान
सौरभांचल, गन्नौर

1200 वर्ष प्राचीन भूगर्भ से प्रगटित
1008 श्री मंशापूर्ण महावीर स्वामी जी
गंगनहर, मुरादनगर

श्री 1008 पद्मप्रभु भगवान
पुष्पगिरी, म. प्र.

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान ''सौरभाँचल'' (निर्माणाधीन)
श्री सम्मेद शिखर जी मधुबन

❊ पुण्यार्जक ❊

गुरु भक्त
स्व. श्रीपाल जैन

Shri Pal Manoj Kumar Jain

1219, 1st Floor, Katra Satyanarayan, Chandni Chowk, Delhi

Navkaar Fashion

1348 Katra Leshwan Chandni Chowk, Delhi.

Shri Saurabh Creation

1741-1746, Cheera Khana, Nai Sarak, Chandni Chowk, Delhi.
Mob. No.: 9310108327, 9999866868, Tel.: 011-46066868

संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
जीवन आशा हॉस्पिटल प्रेरणा स्रोत
आचार्य श्री 108 सौरभसागर जी
महाराज